

पुस्तक समीक्षा

डिजिटल युग में हिंदी पत्रकारिता की नई दिशा : संभावनाओं, चुनौतियों और परिवर्तन का बहुआयामी दस्तावेज

डिजिटल युग में हिंदी पत्रकारिता : संभावनाएँ और चुनौतियाँ,

संपादक- प्रो. आशा शुक्ला, प्रकाशक- आशा पारस फॉर पीस एंड हारमनी

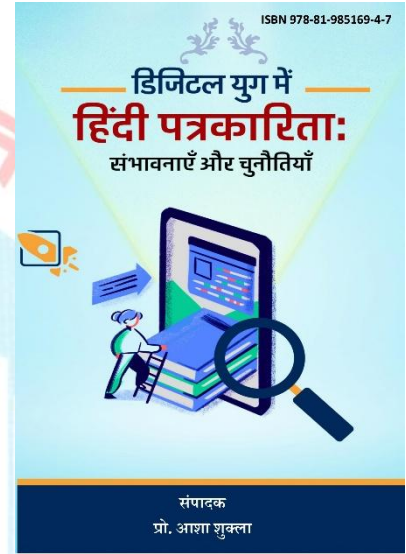
फाउंडेशन, भारत, वर्ष- 2025, पृ.स.-257, मूल्य- 1000/-,

ISBN- 978-81-985169-4-7

समीक्षक- डॉ. शैलेश शुक्ला, वैश्विक प्रधान संपादक, सृजन संसार

अंतरराष्ट्रीय पत्रिका समूह आशियाना, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

ईमेल पता : PoetShailesh@gmail.com



प्रस्तावना

इक्कीसवीं सदी सूचना, संचार और प्रौद्योगिकी के तीव्र विस्तार की सदी है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया, कृत्रिम मेधा, डेटा पत्रकारिता, वर्चुअल रियलिटी और अन्य डिजिटल तकनीकों ने न केवल समाचारों के संकलन, संपादन, प्रस्तुतीकरण और प्रसार की पद्धति बदली है, बल्कि पत्रकारिता की मूल प्रकृति, उसकी भाषा, उसकी सामाजिक भूमिका और उसकी नैतिक चुनौतियों को भी नए सिरे से परिभाषित किया है। ऐसे संक्रमणकाल में प्रो. आशा शुक्ला द्वारा संपादित बहु-लेखकीय ग्रंथ *डिजिटल युग में हिंदी पत्रकारिता : संभावनाएँ और चुनौतियाँ* अत्यंत सामयिक हस्तक्षेप के रूप में सामने आता है। 2025 में प्रकाशित इस ग्रंथ का प्रकाशन आशा पारस फॉर पीस एंड हारमनी फाउंडेशन, भोपाल ने किया है। इसके सह-संपादक डॉ. रामशंकर, डॉ. शैलेश शुक्ला और डॉ. सर्जना चतुर्वेदी हैं तथा प्रबंध संपादक लव चारवड़ीकर हैं। पुस्तक का ISBN 978-81-985169-4-7 है और इसका मूल्य ₹1000 है।

यह पुस्तक केवल हिंदी पत्रकारिता के डिजिटलीकरण का विवरण प्रस्तुत करने वाला संकलन नहीं है, बल्कि यह उस व्यापक परिवर्तन को समझने का प्रयास करती है जिसमें तकनीक, भाषा, समाज, लोकतंत्र, नैतिकता और पत्रकारिता परस्पर जुड़े हुए हैं। पुस्तक की विशेषता यह है कि इसमें डिजिटल पत्रकारिता को केवल तकनीकी उपलब्धि के रूप में नहीं देखा गया, बल्कि उसके सामाजिक प्रभावों, भाषाई परिवर्तनों, रोजगार संबंधी चिंताओं,

महिला पत्रकारिता, हाशिए के समाजों की अभिव्यक्ति, कृत्रिम मेधा और फोटो पत्रकारिता जैसी समकालीन चुनौतियों को भी विमर्श का हिस्सा बनाया गया है।

पत्रकारिता के संक्रमणकाल की पहचान

पुस्तक की वैचारिक पृष्ठभूमि वरिष्ठ पत्रकार प्रो. के. वी. सुरेश के लेखन से मजबूत होती है। हिंदी पत्रकारिता के ऐतिहासिक विकास और डिजिटल युग में उसके बदलते स्वरूप को समझाते हुए पुस्तक पत्रकारिता को एक ऐसे चरण में प्रवेश करता हुआ देखती है जहाँ पारंपरिक कलम और मुद्रित माध्यमों की केंद्रीयता को कंप्यूटर, इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों ने व्यापक रूप से बदल दिया है।

यह परिवर्तन केवल माध्यम का परिवर्तन नहीं है। डिजिटल पत्रकारिता ने समाचारों की गति, पहुंच और पाठक की भूमिका में भी परिवर्तन किया है। पहले समाचार का निर्माण और प्रसार मुख्यतः संस्थागत मीडिया के नियंत्रण में था, जबकि डिजिटल माध्यमों ने आम व्यक्ति को भी सूचना के निर्माण और प्रसार में भागीदार बनाया है। इस दृष्टि से पुस्तक पत्रकारिता के लोकतंत्रीकरण को डिजिटल परिवर्तन की प्रमुख उपलब्धि के रूप में रेखांकित करती है।

पुस्तक के संबंधित अध्याय में यह भी स्पष्ट किया गया है कि इंटरनेट और मोबाइल पत्रकारिता ने हिंदी पत्रकारिता को नए अवसर दिए हैं। इंटरनेट के विस्तार के साथ हिंदी पत्रकारिता के पारंपरिक मॉडल में व्यापक परिवर्तन आया और स्मार्टफोन तथा इंटरनेट ने सामान्य नागरिक को ब्लॉग, सोशल मीडिया और वेब पोर्टल के माध्यम से अपनी राय सार्वजनिक रूप से रखने का अवसर दिया। पुस्तक इस प्रक्रिया को पत्रकारिता के लोकतंत्रीकरण से जोड़ती है।

यही परिवर्तन हिंदी पत्रकारिता के भविष्य की संभावनाओं का आधार भी बनता है। डिजिटल माध्यमों ने हिंदी पत्रकारिता को क्षेत्रीय सीमाओं से आगे बढ़ाकर वैश्विक हिंदी समाज तक पहुंचने की संभावना प्रदान की है। पुस्तक के एक अध्याय में विदेशों में बसे भारतीय समुदाय के बीच हिंदी डिजिटल पत्रकारिता की भूमिका का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया और खाड़ी देशों में रहने वाले प्रवासी भारतीय डिजिटल माध्यमों के जरिए भारत की राजनीति, समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति से जुड़े रहते हैं।

भाषा का डिजिटल रूपांतरण और हिग्लिश

पुस्तक का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष हिंदी पत्रकारिता की भाषा में आए परिवर्तन का विश्लेषण है। डिजिटल माध्यमों ने भाषा को अधिक गतिशील, त्वरित और प्रयोगधर्मी बनाया है। सोशल मीडिया, वेबसाइट, ब्लॉग, वीडियो और पॉडकास्ट जैसे माध्यमों में भाषा का प्रयोग पारंपरिक समाचार-पत्रों की भाषा से अलग दिखाई देता है।

पुस्तक में हिंदी और अंग्रेजी के पारस्परिक संबंध पर भी गंभीर विचार किया गया है। भाषाओं के विकास को केवल शुद्धतावादी दृष्टिकोण से देखने के बजाय पुस्तक भाषा की जीवंतता, परिवर्तनशीलता और सामाजिक उपयोगिता पर बल देती है। संबंधित अध्याय में यह प्रश्न उठाया गया है कि अंग्रेजी भाषा ने समय के साथ दूसरे भाषाई-सांस्कृतिक

प्रभावों को स्वीकार करते हुए स्वयं को समृद्ध किया, तो हिंदी के विकास में वैसी लचक क्यों नहीं दिखाई देनी चाहिए।

इसी संदर्भ में पुस्तक हिंग्लिश के बढ़ते प्रयोग को भी डिजिटल संचार की एक वास्तविकता के रूप में देखती है। यह परिवर्तन विशेष रूप से युवा और तकनीकी रूप से सक्रिय पाठकों के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। डिजिटल हिंदी की भाषा अब केवल व्याकरणिक शुद्धता का प्रश्न नहीं रह गई है; वह संचार की गति, पाठक की सुविधा और बदलती सामाजिक भाषिक आदतों से भी प्रभावित हो रही है।

इस दृष्टि से पुस्तक का भाषाई विमर्श हिंदी के भविष्य को लेकर किसी एकांगी निष्कर्ष पर नहीं पहुँचता, बल्कि यह संकेत करता है कि हिंदी को डिजिटल दुनिया में प्रभावी बने रहने के लिए तकनीकी और सामाजिक परिवर्तन के साथ निरंतर संवाद करना होगा।

डिजिटल पत्रकारिता और लोकतंत्रीकरण

ग्रंथ का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि डिजिटल माध्यमों ने समाचार-निर्माण की प्रक्रिया को अधिक सहभागी बनाया है। स्मार्टफोन और इंटरनेट के व्यापक प्रसार के कारण समाचारों के उपभोक्ता स्वयं समाचारों के उत्पादक और वितरक भी बन सकते हैं। पुस्तक के अनुसार इंटरनेट और स्मार्टफोन ने हिंदी पत्रकारिता की पहुँच समाज के विभिन्न वर्गों तक बढ़ाई है और सूचना के लोकतंत्रीकरण को गति दी है।

यह परिवर्तन लोकतंत्र के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि अब स्थानीय मुद्दे भी डिजिटल माध्यमों से व्यापक चर्चा का विषय बन सकते हैं। पुस्तक के एक अध्याय में बताया गया है कि हिंदी के हजारों YouTube चैनल और डिजिटल मंच समाज के उपेक्षित समुदायों के मुद्दों को सामने ला रहे हैं तथा सोशल मीडिया पर तत्काल प्रतिक्रिया की व्यवस्था ने पत्रकारों और मीडिया संस्थानों पर अधिक सटीकता और निष्पक्षता का दबाव बढ़ाया है। स्थानीय मुद्दों को राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा मिलने की संभावना भी बढ़ी है।

इस परिवर्तन का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष हाशिए के समुदायों की अभिव्यक्ति है। डिजिटल माध्यमों ने उन समूहों के लिए वैकल्पिक मंच तैयार किए हैं जिन्हें पारंपरिक मीडिया में पर्याप्त स्थान नहीं मिल पाता था। पुस्तक में दलित और वंचित समाज से जुड़े डिजिटल मंचों तथा सामाजिक सरोकारों को सामने लाने वाली पत्रकारिता की चर्चा इस संदर्भ को और व्यापक बनाती है।

कृत्रिम मेधा : अवसर और रोजगार संकट

पुस्तक की समकालीन प्रासंगिकता का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष कृत्रिम मेधा पर उसका विमर्श है। AI ने समाचार लेखन, संपादन, डेटा विश्लेषण, ऑडियो-वीडियो प्रसारण और पाठकों की रुचि के आधार पर समाचारों की अनुशंसा जैसे

क्षेत्रों में नई संभावनाएँ पैदा की हैं। पुस्तक यह भी रेखांकित करती है कि Heliograf और Bloomberg का Cyborg जैसे उपकरण स्वचालित समाचार निर्माण की दिशा में पहले से उपयोग में रहे हैं।

लेकिन पुस्तक तकनीकी उत्साह में रोजगार संकट की अनदेखी नहीं करती। स्वचालित समाचार लेखन और AI आधारित डेटा-प्रोसेसिंग के बढ़ते प्रयोग से पारंपरिक रिपोर्टिंग और संपादन की आवश्यकता कम हो सकती है। पुस्तक स्पष्ट करती है कि AI आधारित पत्रकारिता में मानव पत्रकारों की मांग घटने की आशंका है और भविष्य में मीडिया संस्थानों के सामने मानव पत्रकारिता तथा कृत्रिम मेधा के बीच संतुलन बनाए रखने की चुनौती होगी।

भाषाई स्तर पर भी चुनौतियाँ कम नहीं हैं। पुस्तक के अनुसार हिंदी भाषा के लिए AI मॉडल अभी पूर्ण रूप से विकसित नहीं हैं और स्वचालित लेखन, अनुवाद तथा NLP आधारित प्रणालियाँ अभी विकास की अवस्था में हैं। हिंदी की स्थानीय भाषाई विविधता को ध्यान में रखते हुए अधिक उन्नत AI मॉडल विकसित करने की आवश्यकता पुस्तक स्पष्ट रूप से रेखांकित करती है।

यहाँ पुस्तक की एक विशेष उपलब्धि यह है कि वह AI को केवल सुविधा प्रदान करने वाली तकनीक के रूप में नहीं देखती, बल्कि उसके साथ जुड़े पक्षपात, डेटा गोपनीयता, साइबर सुरक्षा, रोजगार, पारदर्शिता और नैतिकता जैसे प्रश्नों को भी सामने रखती है।

फोटो पत्रकारिता और सत्य की नई चुनौती

कृत्रिम मेधा का सबसे गहरा प्रभाव दृश्य पत्रकारिता पर दिखाई देता है। डॉ. अमित मिश्रा और माला मिश्रा का अध्याय इस संकट को अत्यंत प्रभावी ढंग से सामने लाता है। पुस्तक की शुरुआत ही इस प्रश्न से होती है कि AI तकनीकों ने फोटो पत्रकारिता के पारंपरिक स्वरूप को किस प्रकार चुनौती दी है और पत्रकारिता की मूल अवधारणा 'सत्य की अभिव्यक्ति' को किस प्रकार नैतिक संकट के सामने ला खड़ा किया है।

इस अध्याय में एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया गया है—फोटो पत्रकारिता में अब “क्या दिख रहा है?” से अधिक महत्वपूर्ण “क्या बनाया गया है?” क्यों हो गया है? Generative AI, GANs और Deep Learning आधारित मॉडल ऐसी काल्पनिक तस्वीरें तैयार कर सकते हैं जो देखने में वास्तविक प्रतीत होती हैं। इससे समाचार और सोशल मीडिया दोनों में दृश्य सामग्री की विश्वसनीयता एक गंभीर प्रश्न बन जाती है।

यही इस पुस्तक के सबसे महत्वपूर्ण नैतिक विमर्शों में से एक है। डिजिटल पत्रकारिता में सूचना की गति बढ़ी है, लेकिन उसके साथ सत्यापन की जिम्मेदारी भी बढ़ी है। AI निर्मित छवियों के संदर्भ में पुस्तक पारदर्शिता, स्रोत की पुष्टि, तथ्य-जाँच और स्पष्ट दिशानिर्देशों की आवश्यकता पर बल देती है।

इस प्रकार पुस्तक का संदेश स्पष्ट है कि तकनीक पत्रकारिता को अधिक प्रभावी बना सकती है, लेकिन तकनीकी दक्षता सत्य, विश्वसनीयता और नैतिकता का विकल्प नहीं हो सकती।

डिजिटल पत्रकारिता में महिलाओं की भागीदारी और सशक्तिकरण

‘डिजिटल युग में हिंदी पत्रकारिता : संभावनाएँ और चुनौतियाँ’ की एक उल्लेखनीय विशेषता यह है कि इसमें डिजिटल पत्रकारिता के विकास को केवल तकनीकी परिवर्तन तक सीमित नहीं रखा गया है। पुस्तक में महिला पत्रकारिता के बदलते स्वरूप और डिजिटल माध्यमों से महिलाओं को प्राप्त नए अवसरों को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। संबंधित अध्याय में स्पष्ट किया गया है कि डिजिटल मीडिया के आगमन से पत्रकारिता का क्षेत्र प्रिंट मीडिया और टेलीविजन तक सीमित न रहकर ऑनलाइन समाचार पोर्टल, सोशल मीडिया, YouTube और पॉडकास्ट जैसे अनेक मंचों तक फैल गया है। इससे महिलाओं को पारंपरिक मीडिया संस्थानों की सीमाओं से बाहर निकलकर स्वतंत्र रूप से ब्लॉग, समाचार वेबसाइट और सोशल मीडिया मंच संचालित करने के अवसर मिले हैं।

पुस्तक इस परिवर्तन को महिला सशक्तिकरण की व्यापक प्रक्रिया से जोड़ती है। डिजिटल मंचों के माध्यम से महिलाएँ उन विषयों पर भी अपनी बात सार्वजनिक रूप से रख पा रही हैं, जिन पर पारंपरिक मीडिया में अपेक्षाकृत कम चर्चा होती थी। लैंगिक भेदभाव, यौन उत्पीड़न, घरेलू हिंसा और अन्य सामाजिक मुद्दों पर महिलाओं की स्वतंत्र अभिव्यक्ति डिजिटल पत्रकारिता की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में सामने आती है। पुस्तक यह भी बताती है कि सफल महिला पत्रकारों की उपस्थिति दूसरी महिलाओं को इस क्षेत्र में आने के लिए प्रेरित कर रही है और अनेक महिलाएँ स्वतंत्र मीडिया प्लेटफॉर्म संचालित कर रही हैं।

हालाँकि पुस्तक इस उपलब्धि को एकतरफा उत्सव के रूप में प्रस्तुत नहीं करती। ऑनलाइन ट्रोलिंग, साइबर बुलिंग, अभद्र टिप्पणियाँ, धमकियाँ, लैंगिक उत्पीड़न और सुरक्षा संबंधी समस्याएँ महिला पत्रकारों के सामने गंभीर चुनौतियाँ हैं। पुस्तक के अनुसार डिजिटल माध्यमों पर सक्रिय रहते हुए भी अनेक महिला पत्रकारों को अपनी सुरक्षा से समझौता करना पड़ता है, जिससे उनके कार्य की स्वतंत्रता प्रभावित हो सकती है। इस प्रकार पुस्तक महिला पत्रकारिता के डिजिटल विस्तार के साथ उससे जुड़ी असुरक्षा और नैतिक-सामाजिक चुनौतियों को भी समान महत्व देती है।

पुस्तक का निष्कर्ष इस संदर्भ में आशावादी है। डिजिटल पत्रकारिता में महिलाओं की भागीदारी निरंतर बढ़ रही है और नए तकनीकी उपकरण उनके लिए संभावनाओं का विस्तार कर रहे हैं। AI, डेटा जर्नलिज्म और मल्टीमीडिया स्टोरीटेलिंग जैसे उपकरण महिला पत्रकारों को और सशक्त बना सकते हैं। साथ ही पुस्तक सरकार और निजी क्षेत्र से डिजिटल साक्षरता, प्रशिक्षण तथा सुरक्षा के लिए प्रभावी नीतियाँ बनाने की अपेक्षा करती है।

डिजिटल पत्रकारिता और विश्वसनीयता का प्रश्न

डिजिटल पत्रकारिता की सबसे बड़ी उपलब्धि उसकी गति है, लेकिन यही गति उसकी सबसे बड़ी चुनौती भी बन जाती है। सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सूचना कुछ ही क्षणों में व्यापक स्तर पर प्रसारित हो सकती

है। ऐसी परिस्थिति में तथ्य-जाँच, स्रोतों की पुष्टि और पत्रकारिता की नैतिक जिम्मेदारी पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

पुस्तक के एक अध्याय में डिजिटल माध्यमों पर मिथ्या सूचना के प्रसार की संभावना को रेखांकित करते हुए डिजिटल साक्षरता और तथ्य-जाँच की आवश्यकता पर बल दिया गया है। पुस्तक का निष्कर्ष है कि डिजिटल पत्रकारिता लोकतंत्र को मजबूत करने और जनता को जागरूक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, लेकिन इसके लिए मीडिया साक्षरता और तथ्य-जाँच की संस्कृति आवश्यक है।

यहाँ पुस्तक की दृष्टि संतुलित है। वह डिजिटल पत्रकारिता की संभावनाओं को स्वीकार करते हुए उसके भीतर मौजूद फेक न्यूज, भ्रामक सूचना और व्यावसायिक दबावों की समस्या को भी सामने रखती है। डिजिटल माध्यमों पर विज्ञापन और व्यावसायिकता का दबाव पत्रकारिता की स्वतंत्रता, निष्पक्षता, नैतिकता और दायित्व-बोध को प्रभावित कर सकता है। पुस्तक यह भी बताती है कि पत्रकारों के सामने तेज गति से बदलते समाचार चक्र में समय पर समाचार देने और गंभीरता से रिपोर्टिंग करने के बीच संतुलन कायम करने की चुनौती रहती है।

इस संदर्भ में पुस्तक का एक महत्वपूर्ण संदेश यह है कि डिजिटल पत्रकारिता में तकनीकी दक्षता के साथ पत्रकारिता के मूल्यों की रक्षा भी अनिवार्य है। समाचार जितनी तेजी से पाठक तक पहुँचे, उतना ही आवश्यक है कि वह सत्यापित और विश्वसनीय भी हो।

डिजिटल युग में पत्रकारिता की बदलती भूमिका

डिजिटल पत्रकारिता ने पत्रकार और पाठक के संबंध को भी बदल दिया है। पारंपरिक पत्रकारिता में पाठक मुख्यतः समाचार का उपभोक्ता था, जबकि डिजिटल युग में पाठक प्रतिक्रिया देने, टिप्पणी करने, साझा करने और कई बार स्वयं सामग्री तैयार करने की स्थिति में है। इस कारण पत्रकारिता अब एकतरफा संचार प्रक्रिया नहीं रह गई है।

पुस्तक डिजिटल पत्रकारिता को सामाजिक परिवर्तन के एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में देखती है। डिजिटल माध्यमों ने नागरिकों को सूचना तक अधिक त्वरित पहुँच दी है और स्थानीय मुद्दों को व्यापक सार्वजनिक विमर्श का हिस्सा बनने का अवसर प्रदान किया है। इस परिवर्तन का लोकतांत्रिक महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि इससे नागरिक समाज, स्थानीय समुदायों और विभिन्न सामाजिक समूहों की आवाज को व्यापक मंच मिल सकता है।

पुस्तक के निष्कर्षों में डिजिटल पत्रकारिता को लोकतंत्र की नींव मजबूत करने और जनता को उनके अधिकारों तथा कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाने वाली शक्ति के रूप में देखा गया है। यह दृष्टिकोण पुस्तक को केवल तकनीकी पत्रकारिता पर केंद्रित पुस्तक न बनाकर लोकतंत्र और समाज के संदर्भ में डिजिटल मीडिया के अध्ययन का दस्तावेज बनाता है।

हिंदी पत्रकारिता का भविष्य

पुस्तक का समग्र स्वर हिंदी पत्रकारिता के भविष्य को लेकर सकारात्मक है। डिजिटल माध्यमों की ओर बढ़ी संख्या में युवा पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं के आकर्षित होने को पुस्तक हिंदी पत्रकारिता के लिए महत्वपूर्ण अवसर मानती है। साथ ही वह यह स्वीकार करती है कि डिजिटल पत्रकारिता के सामने अनेक समस्याएँ और कमियाँ हैं, लेकिन इन चुनौतियों के बावजूद भविष्य में हिंदी पत्रकारिता के लिए व्यापक संभावनाएँ मौजूद हैं।

इस भविष्य को मजबूत करने के लिए केवल तकनीकी विकास पर्याप्त नहीं होगा। हिंदी को डिजिटल तकनीकों के अनुकूल बनाना, भाषा संबंधी AI उपकरणों का विकास करना, पत्रकारों को नई तकनीकों का प्रशिक्षण देना, तथ्य-जाँच की व्यवस्था मजबूत करना और पत्रकारिता की नैतिकता को बनाए रखना समान रूप से आवश्यक होगा। विशेष रूप से AI के दौर में हिंदी पत्रकारिता को ऐसे तकनीकी संसाधनों की आवश्यकता है जो भारतीय भाषाई विविधता को समझ सकें और हिंदी के विभिन्न रूपों, बोलियों तथा स्थानीय भाषाई संदर्भों के साथ काम कर सकें।

इस संदर्भ में पुस्तक में हिंदी AI मॉडल के विकास की आवश्यकता पर दिया गया बल विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। हिंदी के लिए स्वचालित लेखन, अनुवाद और NLP प्रणालियाँ अभी विकासशील अवस्था में हैं और स्थानीय भाषाई विविधता को ध्यान में रखते हुए अधिक सक्षम मॉडल विकसित करने की आवश्यकता है।

पुस्तक की संरचना और बहु-लेखकीय स्वरूप

इस पुस्तक का एक महत्वपूर्ण गुण उसका बहु-लेखकीय स्वरूप है। अलग-अलग लेखकों ने डिजिटल पत्रकारिता को इतिहास, भाषा, तकनीक, महिला पत्रकारिता, AI, फोटो पत्रकारिता, सामाजिक सरोकार और भविष्य की संभावनाओं जैसे अलग-अलग कोणों से देखने का प्रयास किया है। इससे पाठक को एक ही विषय के अनेक आयामों से परिचित होने का अवसर मिलता है।

विशेष रूप से AI और फोटो पत्रकारिता पर डॉ. अमित मिश्रा तथा माला मिश्रा का अध्याय पुस्तक के समकालीन महत्व को बढ़ाता है। इसी प्रकार महिला पत्रकारिता पर केंद्रित अध्याय डिजिटल माध्यमों के सामाजिक और लैंगिक प्रभावों को समझने में उपयोगी है। पुस्तक में डिजिटल पत्रकारिता के इतिहास और उसके विकासक्रम पर भी सामग्री उपलब्ध है। उदाहरण के लिए, 1998 तक लगभग 48 समाचार पत्रों के ऑनलाइन हो जाने तथा 1996 में आकाशवाणी की 'ऑनलाइन सूचना सेवा' के प्रायोगिक संस्करण का उल्लेख डिजिटल पत्रकारिता के आरंभिक इतिहास को समझने में उपयोगी है।

हालाँकि बहु-लेखकीय पुस्तकों की स्वाभाविक सीमा यहाँ भी दिखाई देती है। विषयों की व्यापकता के कारण कुछ लेख विश्लेषणात्मक गहराई की अपेक्षा सूचना-संकलन पर अधिक केंद्रित दिखाई देते हैं। कहीं-कहीं संदर्भ सामग्री को और व्यवस्थित तथा अद्यतन किया जा सकता था। फिर भी समग्र रूप में विविध विषयों को एक ही पुस्तक में समेटने का प्रयास सराहनीय है।

पुस्तक की सीमाएँ

किसी भी समकालीन विषय पर लिखी पुस्तक की तरह इस ग्रंथ की भी कुछ सीमाएँ हैं। डिजिटल पत्रकारिता अत्यंत तेजी से बदलने वाला क्षेत्र है। AI, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, डेटा पत्रकारिता और दृश्य सत्यापन की तकनीकों में निरंतर बदलाव हो रहे हैं। इसलिए पुस्तक में उल्लिखित कुछ तकनीकी उदाहरण समय के साथ पुराने पड़ सकते हैं।

दूसरी सीमा यह है कि हिंदी डिजिटल पत्रकारिता के संदर्भ में भविष्य के लिए कुछ प्रश्नों पर और अधिक अनुभवजन्य अध्ययन की आवश्यकता है—जैसे हिंदी डिजिटल समाचार-पोर्टलों की आर्थिक संरचना, पत्रकारों की बदलती रोजगार-स्थितियाँ, AI के कारण वास्तविक रोजगार परिवर्तन, ग्रामीण और शहरी डिजिटल पत्रकारिता के बीच अंतर तथा हिंदी के विभिन्न भाषाई क्षेत्रों में डिजिटल पत्रकारिता का प्रभाव। पुस्तक इन प्रश्नों की दिशा अवश्य खोलती है, लेकिन उन पर व्यापक अनुभवजन्य शोध की गुंजाइश बनी रहती है।

तीसरी महत्वपूर्ण आवश्यकता AI और पत्रकारिता के बीच संबंध को और गहराई से देखने की है। पुस्तक ने AI Ethics, Bias, Data Privacy और Algorithmic Transparency जैसे महत्वपूर्ण प्रश्न उठाए हैं। AI आधारित पत्रकारिता में निष्पक्षता, पारदर्शिता और नैतिकता की आवश्यकता पर पुस्तक स्पष्ट रूप से बल देती है। भविष्य के संस्करणों में इन विषयों पर अंतरराष्ट्रीय उदाहरणों और भारतीय समाचार संस्थानों के केस-स्टडी आधारित विश्लेषण को और विस्तार दिया जा सकता है।

निष्कर्ष

समग्रतः डिजिटल युग में हिंदी पत्रकारिता : संभावनाएँ और चुनौतियाँ हिंदी पत्रकारिता के वर्तमान संक्रमणकाल को समझने वाला उपयोगी और समयानुकूल ग्रंथ है। इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि यह डिजिटल पत्रकारिता को केवल इंटरनेट या सोशल मीडिया की पत्रकारिता के रूप में नहीं देखता, बल्कि उसे भाषा, लोकतंत्र, समाज, महिला सशक्तिकरण, तकनीकी परिवर्तन, कृत्रिम मेधा, रोजगार, नैतिकता और सत्यापन जैसे व्यापक प्रश्नों से जोड़ता है।

पुस्तक यह स्पष्ट करती है कि डिजिटल युग में पत्रकारिता समाप्त नहीं हो रही, बल्कि उसका स्वरूप बदल रहा है। पत्रकार की भूमिका भी समाप्त नहीं होगी, लेकिन उसे तकनीकी रूप से अधिक दक्ष, तथ्य-जाँच में अधिक सावधान और नैतिक रूप से अधिक जिम्मेदार होना पड़ेगा। AI पत्रकार के स्थान पर पूरी तरह स्थापित होने के बजाय फिलहाल पत्रकारिता की कार्यप्रणाली को बदलने वाली शक्ति के रूप में सामने आती है; लेकिन रोजगार, भाषा, पारदर्शिता और विश्वसनीयता से जुड़े प्रश्नों को नजरअंदाज करना गंभीर भूल होगी।

विशेष रूप से हिंदी के संदर्भ में यह पुस्तक एक महत्वपूर्ण प्रश्न छोड़ती है—क्या हिंदी केवल डिजिटल माध्यमों की उपभोक्ता भाषा बनेगी या वह अपनी तकनीकी क्षमताएँ विकसित करके AI और डिजिटल पत्रकारिता के भविष्य

को भी प्रभावित करेगी? हिंदी AI मॉडल की सीमाओं, भाषा-विशिष्ट तकनीकी संसाधनों की आवश्यकता और स्थानीय भाषाई विविधता के प्रश्न पुस्तक में इस दिशा की ओर संकेत करते हैं।

महिला पत्रकारिता के संदर्भ में पुस्तक यह दिखाती है कि डिजिटल माध्यमों ने अभिव्यक्ति के नए द्वार खोले हैं, लेकिन सुरक्षा, ट्रोलिंग और साइबर उत्पीड़न जैसी चुनौतियों के समाधान के बिना यह सशक्तिकरण अधूरा रहेगा। वहीं AI और फोटो पत्रकारिता पर चर्चा यह चेतावनी देती है कि जब कृत्रिम रूप से निर्मित दृश्य वास्तविकता जैसे दिखाई देने लगें, तब पत्रकारिता के लिए सत्यापन पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो जाएगा।

अंततः यह कहा जा सकता है कि यह पुस्तक हिंदी पत्रकारिता के अतीत, वर्तमान और संभावित भविष्य के बीच एक संवाद स्थापित करने वाला महत्वपूर्ण संकलन है। इसमें कुछ स्थानों पर विषयों को और अधिक शोधपरक गहराई, अद्यतन आँकड़ों और केस-स्टडी की आवश्यकता अवश्य महसूस होती है, किंतु समकालीन हिंदी पत्रकारिता के डिजिटल संक्रमण को समझने वाले विद्यार्थियों, शोधार्थियों, पत्रकारों, मीडिया शिक्षकों और हिंदी भाषा-तकनीक के अध्येताओं के लिए यह ग्रंथ उपयोगी संदर्भ सामग्री का कार्य कर सकता है।

डिजिटल युग में पत्रकारिता की सबसे बड़ी चुनौती तकनीक को अपनाना नहीं, बल्कि तकनीक के बीच पत्रकारिता के सत्य, विश्वसनीयता, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय संवेदना को बचाए रखना है। 'डिजिटल युग में हिंदी पत्रकारिता : संभावनाएँ और चुनौतियाँ' की वास्तविक प्रासंगिकता इसी प्रश्न को हमारे सामने रखने में निहित है।

